Storia della Lingua Greca – Laurea Magistrale – 9.10.2012

Sapph. fr. 55 V.

κατθάνοισα δὲ κείση̣‿οὐδέ ποτα μναμοσύνα σέθεν
ἔσσετ᾽ οὐδὲ †ποκ᾽† ὔστερον· οὐ γὰρ πεδέχη̣ς βρόδων
τῶν ἐκ Πιερίας· ἀλλ᾽ ἀφάνης κἀν Ἀίδα δόμῳ̣
φοιτάση̣ς πεδ᾽ ἀμαύρων νεκύων ἐκπεποταμένα.

Metro: asclepiadei maggiori (gl^{2c}: ××–◡◡–⁞–◡͡◡–⁞–◡◡–◡⏓‖); sinecfonesi: v. 1 κείση̣‿οὐδέ.

Stob. III 4,12 (I); **(1s.–ἔσ-, 2s. οὐ–Πιερίας)** Plut. *Praec. con.* 48, 145f-146a (II); **(1–κείση̣, 2s. οὐ–Πιερίας)** Plut. *Quaest. conv.* III 1, 646e-f (III); **(2s. οὐ–Πιερίας)** Clem. Al. *Paed.* II 8,72 (IV). Cf. Aristid. *Or.* 28,51 ‖ **1** κείση censor Darmstadiensis : -εαι testt. | οὐδέ ποτα Blomfield : οὐδέποτε I : οὐδέ τις II : οὐδ' ἔτι τις Spengel : nescio an οὐδ' ἐπί τις, cl. *Il.* IX 415s. ad ἐπὶ … ἔσσεται ‖ **2** ἔσσετ' I : ἔσεται II | οὐδέποκ' I : -ποτ' εἰς Grotius, fort. recte : οὐδὲ πόθα‿εἰς Bucherer : οὐδ' ἔπος εἰς Yatromanolakis | πεδέχη̣ς Lobel : -ης III : παῖδ' ἔχεις II(codd. pll.) : μετέχεις I, II(**O**) : ἀπ' ἀρχῆς IV | βρόδων Brunck : ῥόδων vel ῥόδον testt. ‖ **3** Πιερίας testt. pll. : περιεργίας IV | κἀν Lobel : κεἰν I | Ἀίδα I(*Voss.*) : -δαο I(**A**^{2}) | δόμῳ̣ Fick : δόμο I : δόμοις Trincavelli ‖ **4** φοιτάση̣ς Lobel : -(ε)ις I | πεδ' Saumaise : παῖδ' I

Sapph. fr. 91 V.

ἀσαροτέρας οὐδάμα πΩἶρανα σέθεν τύχοισαν

Sapph. fr. 135 V.

τί με Πανδίονις, Ὤιρανα, χελίδω ...;

Sapph. fr. 155 V.

πόλλα μοι τὰν Πωλυανάκτιδα παῖδα χαίρην